इनमें से कौन है मेरा भाई

"माँ, मुझे भी जाना है गुड्डू और भोला के साथ" यह कहकर सोना माँ की साड़ी को आँचल पकड़ने लगी।

गुड्डू और भोला सोना की छोटा भाई और बहन था। सोना बारह-तेरह साल की छोटी सी लड़की जो बड़े-बड़े अरमानों लेकर घूमती है। दिखने में तो भला चंगा है। गला में मुरखी, हाथ में चाँदी के कड़े और घुंघरू, जिसके आवाज़ सोना के आने की इशारा देती थी।

अपने एक हाथ से सोना अपनी मासूम सा चेहरा

एक हाथ से सिर गुजलाते हुए माँ की ओर उत्तर की प्रतीक्षा से के लिए देखा। मगर उसने माँ की आँखों में और कुछ देखा, जो उसकी समझ की बाहर थी। फिर भी उसने उस माँ की जवाब की इन्तज़ार में रही। हमेशा की तरह खामोशी के अलावा कुछ उत्तर नहीं मिला।

"रे छोकरी, कितनी बार कहा कि ऐसी आँगन में मत पड़े रे, चल हट अन्दर चल।"

अपनी पापा की तिलमिल आवाज सुनकर सोना सिसकने लगे और माँ के पीठ में छुप गई चुहचुहा पसीना माँ की शरीर में चिप गई।

"ये किन्नर हमारे लिए एक अपशकुन है। अच्छे काम केलिए जाते समय आगे दौड़ कर आती है" पापा जि क्रोध से तिलमिल हो उठी। फिर अपनी हाथों से अपनी मूछें काले घने, लंबे मूछों को हाथ से ठीक करके घर से निकल गई।

एक ठंडी हवा सोना की ओर बरसने लगी। ना जाने किसने भेजा सोना के पसीने को ले जाने।

माँ की पास रुके रोने की कुछ आवाज सुना जो सोना की श्रद्धा को वहा ले गया। उसने अपनी माँ की ओर देखा। मगर घूँघट की वजह से कुछ नहीं देखा।

सोना सोच गई थी कि कुछ पूछेगी तो खामोशी के अलावा उसे कुछ नहीं मिलेगी। इसलिए वहाँ की खामोशी तोड़ने केलिए हवा तूफान में बदल गया।

अपनी खिसी हुई हाथों से माँ ने सोना को ज़ोर से पकड़ा और कंधों से कंधे मिलाया। माँ की बदन की गर्मी सोना के लिए बहुत अधिक समाधान देदिया। सोना की सभी प्रश्नों को उत्तर उसे तब तक मिल चुका था। ठंडी हवा तीसरी की तरह माँ बेटी के साथ कंधे मिलाया, जो दोनों को महसूस हुआ।

माँ ने धीरे से सोना से हाथ हटाया उसे लगने लगा कि दुनिया पीछे चलने लगी और दुनिया उस से उसकी सारी खुशी छीन ने में तुली हुई है।

"रे, छोकरी जा रसोई में जा, कुछ हाथ लगा माँ, हम सब रसोई के लिए ही बने हुए हैं। दादी कि यह प्रस्ताव सोना को बिलकुल पसंद नही आया फिर भी वो माँ के साथ हाथ बटाने के लिए चली गई।

"माँ किन्नर क्या होती है? क्या सारी लड़कियों में से कुछ लोग किन्नर होती है? पापा, यहाँ कि पास कि लोगों सब क्यूँ मुझे किन्नर बुलाती है,?

माँ कि आँखो ग्लानी और तिरस्कार से भर गया, और धीरे से वह कहा "बेटा, तुम सब से अलग हो, जो भगवान हमें तोहफान किया है" यह सुनकर सोना खुशी से पागल हुई। "सच। माँ..."

"अच्छा, माँ मुझे भी गुड्डू और मेला की तरह स्कूल जाना है, क्यों माँ, मुझे भी जाना है...?

माँ की खामोशी फिर से घर को अनजान बना किया। माँ का भी बहुत मन करता था कि सोना को भी स्कूल भेजे। पर क्या कर सकती कुछ नहीं। पापा तो उसे शहर की रंगमहल में छोड़ने की लिए तुले हुई है। जरूर इसमें से एक जरूर होगा, यह बात तो पक्की था।

उस रात माँ ने पापा से स्कूल की बात कहा। मौन-मुग्ध रात की शोभा पापा की शोर की आवाज़ मिटा दिया। न, इस कि

"न, इस किन्नर की लिए रंगमहल ही सही है, और कुछ नहीं" माँ कि आत्मा में न जाने अभी-अभी काली माता बस गया, जो उस आदमी को डर कि पहली बार डरा दिया।

अगले दिन सोना ने अपनी

ठंडी हवा ठंडी, खुशबुदार हवा सोना कि घुंघरू को हिला दिया, जो उसे सोने से उठा दिया। उस मुस्कुराकर उठी, लगा कि भूमी का सारी खुशी उसे ही मिला था।

माँ ने मुर्खी को स्कूल बेचने का कालिन तय

माँ ने सोना को स्कूल अपनी दोनो बच्चों की तरह बेचना तय किया था। सोना को यह बात सुनकर लगा कि आनंद कि फुलझडियाँ बरसने लगी। फिर पापा के बारे सोचते समय लगा कि उसके खुशी केलिए किसी कि नजर पड गयी है।

माँ ने अपनी तीनों बच्चों को स्कूल बहार तक छोड आया। घर कि पास कि एक आदमी सोना को देखकर आश्चर्य से कहा, "ये किन्नर, कहा जा रही हूँ? और एक गंधी बुरी नजर डाला जो आग से भी भयानक था।

उसके गुड्डू अपनी दीदी कि ओर देखा फिर बिना कुछ कहे नीचे देखा।

सोना को सारी जगह अनजानी हवा के अलावा वो किसी को नहीं जानता था।

साइकिल से दूध बेचने चलनेवाले ने सोना की और देखकर एक बार मुस्कुराया, जो सोना को गुस्सा दिला दिया, और दूध वाले ने कहा "रे, असली सोना है, जल्दी आ गया महफ़िल में"। सोना आँख को ज्वाला दूध वाले को माँन में जाने केलिए बंद किया।

गुड्डू बस छोटे थे, मगर उसकी समझ सबकी समझ की बाहर थी।

सोना को माँ के शब्दों याद आया कि क्यों ये लोग उसे अलग कहते हैं।

उसने आगे के रास्ते को देखा, सब कुछ भयानक सा लगा, सामने वाले कुआ, बड़े बड़े पेड़ो, कुत्ते की आवाज, सब कुछ उसे पीछे कदम बढ़ाने केलिए प्रेरणा किया।

गुड्डू की आँखों में भी न जाने कितने प्रश्नों है? भोला तो बस अनसुना रहकर आगे रास्ते को देखा।

अचानक कुछ चीज़ के कारण सोना नीचे गिर गया, और यह उसे ~~और भी~~ दुःख की ~~[illegible]~~ को कुआँ में दबा दिया। हमेशा वह गिरता था फिर उस दिन सब कुछ उसे अन्जान लगा। भैला ने सोना को उठाया, तब वो गुड्डू कुछ नहीं कहा, वो तो गुमसुम हो गयी थी।

सड़क की सारे मर्द उसे देखते तो उसे सब कुछ बुरा ही नज़र आने लगी। हवा धीमे से वहाँ कि पेड़ों को हिलाना शुरू किया।

माँ कि विश्वास कि तरह वो भी समझती है कि भगवान डर ते समय ज़रूर आऊँगी और फट से दुःख को ~~[illegible]~~ वापस लेकर चलती है।

~~[illegible]~~ स्कूल पहुँचने कलिए अब कुछ ही मैल बाकी है, उसने चारों ओर देखा और सोचने लगे, इनमें से कौन है मेरा भगवान ?..... इनमें से कौन है मेरा भाई जो असली मर्द है ?... इनमें से कौन है मेरा भाई जो हम किन्नरों की इज्जत करता..?

यह सोचते-सोचते सोना को ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ जीने की शक्ति मिला जिसे वो इतने दिन ढूँढा था।